UPPCS MAINS TEST - 11 (SOLUTION)

Q 1. प्राचीन भारत में मंदिर वास्तुकला केवल धार्मिक नहीं थी, बल्कि सामाजिक-आर्थिक स्वरूप भी रखती थी। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- प्राचीन भारत में मंदिर वास्तुकला केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह एक बहुआयामी सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था के रूप में विकसित हुई। ये मंदिर अर्थव्यवस्था, शिक्षा, कला, राजनीति और सामाजिक एकता के प्रमुख केंद्रों के रूप में कार्य करते थे।

मंदिर सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक संस्थाओं के रूप में

- मंदिरों को भूमि अनुदान (देवदान, ब्रह्मदेय) प्राप्त होते थे और वे बड़े भू-स्वामी बन जाते थे। ये शिल्पकारों, नर्तकों, संगीतकारों, पुजारियों और लेखाकारों को रोजगार प्रदान करते थे तथा कृषि अधिशेष के पुनर्वितरण के केंद्र के रूप में कार्य करते थे। उदाहरण: बृहदीश्वर मंदिर (लगभग 1010 ई.), जिसे राजराज चोल प्रथम ने बनवाया, जिसमें भूमि, स्वर्ण और पशुधन के दान से संबंधित 100 से अधिक अभिलेख मिलते हैं।
- **कला और प्रदर्शन का समन्वय:** मंदिर ललित कलाओं के प्रमुख संरक्षक थे। मंडप (स्तंभयुक्त सभा-मंडप) संगीत, नृत्य और नाटक के मंच के रूप में उपयोग होता था। उदाहरण: खजुराहो समूह के मंदिरों में चंदेल काल के संगीतकारों, शिकारी, श्रृंगार करती स्त्रियाँ और सैनिकों के दैनिक जीवन के दृश्य अंकित हैं।
- **शिक्षा और ज्ञान के केंद्र के रूप में मंदिर:** मंदिरों में प्रायः पुस्तकालय (सरस्वती-भंडार), विद्यालय (घटिका, अग्रहारा) तथा वैदिक और दार्शनिक अध्ययन के केंद्र स्थापित होते थे। उदाहरण: नालंदा और अन्य बौद्ध मठ परिसरों ने मंदिर आधारित शैक्षिक परंपरा को प्रभावित किया।
- **स्थानीय परंपराओं और क्षेत्रीय शैलियों का समावेशन:** मंदिर वास्तुकला एकरूप नहीं थी, बल्कि उसने स्थानीय शैलियों को आत्मसात कर क्षेत्रीय भूगोल और संस्कृति का प्रतिबिंब प्रस्तुत किया। उदाहरण: वेसर शैली, जो दक्कन क्षेत्र (जैसे बादामी चालुक्य) में विकसित हुई, नागर (उत्तर) और द्रविड़ (दक्षिण) शैलियों का समन्वय थी।

इस प्रकार, प्राचीन भारतीय मंदिर यह दर्शाते हैं कि धर्म, राजनीति, अर्थव्यवस्था और संस्कृति एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए थे। इसलिए मंदिर वास्तुकला केवल धार्मिक न होकर प्राचीन भारत की सभ्यतागत भावना का प्रतिनिधित्व करती थी।

Q 2. भारतीय संघ में विविध क्षेत्रों के एकीकरण में निहित प्रशासनिक चुनौतियों का परीक्षण कीजिए।

उत्तर: भारत को ब्रिटिश भारतीय प्रांतों, 565 रियासतों और बाद में औपनिवेशिक क्षेत्रों को एक एकीकृत संवैधानिक ढाँचे में शामिल करना था। सरदार वल्लभभाई पटेल और वी.पी. मेनन ने अलग-अलग कानूनी प्रणालियों, आर्थिक विकास के विभिन्न स्तरों और गहरी जातीय पहचानों वाले परिदृश्य के बीच इस एकीकरण को सुलभ बनाया।

विविध क्षेत्रों के एकीकरण में प्रशासनिक चुनौतियाँ

- **विविध प्रशासनिक प्रणालियों का सामंजस्य:** रियासतों में अलग-अलग राजस्व व्यवस्थाएँ, भिन्न पुलिस और सैन्य ढाँचे तथा विशिष्ट न्यायिक संरचनाएँ थीं। इसलिए राजशाही से लोकतांत्रिक संस्थाओं की ओर संक्रमण एक बड़ी चुनौती था। उदाहरण: निज़ाम के अधीन हैदराबाद की अपनी मुद्रा, रेलवे और सेना थी।
- **आर्थिक एवं संसाधन आवंटन से संबंधित चुनौतियाँ:** कुछ राज्य आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर या अत्यंत समृद्ध थे, जबकि अन्य निर्धन और ऋणग्रस्त थे। उदाहरण: प्रिवी पर्स का मुद्दा—सुगम संक्रमण के लिए सरकार ने पूर्व शासकों को "प्रिवी पर्स" (भत्ते) की गारंटी दी।
- **सुरक्षा और विद्रोह संबंधी चुनौतियाँ:** कुछ क्षेत्रों का एकीकरण संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में हुआ। 1947 में जम्मू और कश्मीर का विलय पाकिस्तान समर्थित कबायली आक्रमण के दौरान हुआ।
- **सांस्कृतिक और भाषाई विविधता का प्रबंधन:** भारत की विविधता ने प्रशासन के सामने एक बड़ा प्रश्न खड़ा किया: एकता और समावेशन के बीच संतुलन कैसे स्थापित किया जाए। 1956 के राज्य पुनर्गठन अधिनियम के माध्यम से सीमाओं का पुनर्निर्धारण मुख्यतः भाषाई आधार पर किया गया, जिससे सांस्कृतिक वैधता के माध्यम से प्रशासनिक स्थिरता सुनिश्चित हुई।

यद्यपि एकीकरण ने क्षेत्रीय एकता को सुरक्षित रखा, फिर भी क्षेत्रीय पहचान की राजनीति, उत्तर-पूर्व में उग्रवाद तथा केंद्र-राज्य संबंधों में तनाव जैसी चुनौतियाँ आज भी बनी हुई हैं।

अतः क्षेत्रीय एकीकरण एक एकबारगी घटना नहीं, बल्कि निरंतर विकसित होने वाली प्रशासनिक प्रक्रिया है, जिसमें एकता और विविधता, संप्रभुता और संघवाद तथा राष्ट्रीय अखंडता और क्षेत्रीय आकांक्षाओं के बीच संतुलन स्थापित किया जाता है।

विविध क्षेत्रों के एकीकरण में शामिल प्रशासनिक चुनौतियाँ

- **विविध प्रशासनिक प्रणालियों में सामंजस्य बिठाना:** रियासतों में अलग-अलग राजस्व प्रणालियाँ, पुलिस और सैन्य प्रतिष्ठान और विशिष्ट न्यायिक संरचनाएँ थीं। अतः, राजशाही से लोकतांत्रिक संस्थानों में संक्रमण एक बड़ी चुनौती थी।
  - ✓ **उदाहरण:** निजाम के अधीन हैदराबाद की अपनी मुद्रा (currency), रेलवे और अपनी सेना थी।
- **आर्थिक और संसाधन आवंटन की चुनौतियाँ:** कई राज्य आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर थे या उनके पास विशाल खजाने थे, जबकि अन्य गरीब और कर्ज में डूबे हुए थे।
  - ✓ **उदाहरण:** प्रिवी पर्स का मुद्दा- सुचारू एकीकरण सुनिश्चित करने के लिए, सरकार ने शुरुआत में पूर्व शासकों को "प्रिवी पर्स" (राजभत्ते) देने की गारंटी दी थी।
- **सुरक्षा और विद्रोह की चुनौतियाँ:** कुछ क्षेत्रों का एकीकरण संघर्ष के बीच करना पड़ा।
  - ✓ **उदाहरण:** 1947 में जम्मू और कश्मीर का विलय उस समय हुआ जब पाकिस्तान समर्थित कबीलाई ताकतों ने वहां आक्रमण कर दिया था।
- **सांस्कृतिक और भाषाई विविधता का प्रबंधन:** भारत की विविधता ने एक बड़ी प्रशासनिक दुविधा पैदा की: एकता और क्षेत्रीय आकांक्षाओं के बीच संतुलन बनाना।
  - ✓ **राज्य पुनर्गठन अधिनियम (1956) का कार्यान्वयन:** इस अधिनियम ने मुख्य रूप से भाषा के आधार पर सीमाओं का पुनर्गठन किया, यह स्वीकार करते हुए कि सांस्कृतिक पहचान को मान्यता देने से प्रशासनिक स्थिरता बढ़ती है।

Q 3. स्वदेशी आंदोलन राष्ट्रीय आंदोलन में जनभागीदारी के मामले में एक निर्णायक मोड़ था। इसके सामाजिक और आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर- स्वदेशी आंदोलन (1905-1911), जो लॉर्ड कर्ज़न द्वारा बंगाल विभाजन के कारण प्रारम्भ हुआ, केवल एक क्षेत्रीय विरोध नहीं था, बल्कि इसने उदारवादी राजनीति से सक्रिय जन-आंदोलन की ओर संक्रमण का मार्ग प्रशस्त किया और आगे चलकर गांधीवादी जन आंदोलनों की नींव रखी।

सामाजिक प्रभाव: जनसहभागिता का उदय

- **सामुदायिक लामबंदी और धार्मिक प्रतीकों का उपयोग:** बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चंद्र पाल जैसे नेताओं ने धार्मिक त्योहारों और लोक परंपराओं का उपयोग कर ब्रिटिश सेंसरशिप को दरकिनार किया और जनता तक पहुँचे। उदाहरण: महाराष्ट्र में **गणपति और शिवाजी उत्सवों** को राजनीतिक प्रचार के मंच के रूप में विकसित किया गया।
- **महिलाओं और विद्यार्थियों की भूमिका:** पहली बार महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया; उन्होंने शराब और विदेशी कपड़ों की दुकानों का बहिष्कार किया तथा स्वदेशी कताई-बुनाई को बढ़ावा दिया। विद्यार्थी इस आंदोलन की अग्रिम पंक्ति में थे; उन्होंने सरकारी शिक्षण संस्थानों का बहिष्कार किया, जिसके परिणामस्वरूप 1906 ई. में **नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशन** की स्थापना हुई।
- **सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और पुनर्जागरण:** इस आंदोलन ने सांस्कृतिक जागरण को जन्म दिया। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने 'आमार सोनार बांग्ला' की रचना की, जो बाद में बांग्लादेश का राष्ट्रगान बना। अबनिंद्रनाथ ठाकुर ने भारतीय शैली की विशिष्ट कला विकसित की और 'भारत माता' को चार भुजाओं वाली देवी के रूप में चित्रित किया।

आर्थिक प्रभाव: 'आत्मशक्ति' और आत्मनिर्भरता

- **विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार:** ब्रिटिश नमक, चीनी और कपड़ों के आयात में भारी गिरावट आई। कोलकाता और अन्य शहरों में विदेशी कपड़ों की सार्वजनिक होलियाँ जलाना आम दृश्य बन गया।
- **स्वदेशी उद्योगों का प्रोत्साहन:** स्वदेशी कपड़ा मिलें, साबुन और माचिस कारखाने तथा टेनरियाँ स्थापित की गईं। 1907 में टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (टिस्को) की स्थापना स्वदेशी औद्योगिक आकांक्षा का प्रतीक बनी।
- **बैंकिंग और बीमा का विकास:** इस काल में पंजाब नेशनल बैंक (विस्तार) और कई स्वदेशी बीमा कंपनियाँ उभरीं, जिन्होंने भारतीय उद्यमियों को पूंजी उपलब्ध कराई।

अतः स्वदेशी आंदोलन केवल बंगाल विभाजन के विरोध तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक निर्णायक मोड़ था जिसने भारतीय राष्ट्रवाद के स्वरूप को संवैधानिक याचिकाओं से आगे बढ़ाकर सामाजिक और आर्थिक आत्म-अभिव्यक्ति पर आधारित व्यापक जन-आंदोलन में परिवर्तित कर दिया।

Q 4. ग्रामीण-शहरी प्रवासन भारतीय शहरों में विकास और तनाव दोनों को कैसे बढ़ाता है? विश्लेषण कीजिए।

उत्तर: ग्रामीण-शहरी प्रवास का अर्थ बेहतर आजीविका, शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता की तलाश में गांवों से कस्बों और शहरों की ओर जनसंख्या का पलायन है। भारत की जनगणना 2011 के अनुसार, भारत की लगभग 31% जनसंख्या शहरी क्षेत्रों में रहती है, जिसमें प्रवास शहरी विकास का एक महत्वपूर्ण चालक है।

ग्रामीण–शहरी प्रवासन के विकासात्मक योगदान

- **श्रम आपूर्ति और आर्थिक उत्पादन:** प्रवासी श्रमिक अनौपचारिक अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं और निर्माण तथा विनिर्माण क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। सूरत और लुधियाना जैसे शहरों की औद्योगिक क्षमता ओडिशा, बिहार और उत्तर प्रदेश से आए प्रवासी श्रमिकों पर निर्भर है।
- **बाजार और औद्योगिक विस्तार:** औद्योगिक और सेवा क्षेत्र के केंद्र ग्रामीण प्रवासियों को आकर्षित करते हैं। बेंगलुरु में IT सेवाओं, आतिथ्य और गिग अर्थव्यवस्था में प्रवासियों की बड़ी भागीदारी है।
- **अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में योगदान:** स्ट्रीट वेंडिंग, पुनर्चक्रण और लघु विनिर्माण प्रवासियों के भरोसे चलते हैं। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) का अनुमान है कि भारत के कार्यबल का लगभग 80-90% हिस्सा अनौपचारिक है, जिसमें प्रवासियों की प्रमुख भूमिका है।

ग्रामीण–शहरी प्रवासन से उत्पन्न तनाव

- **शहरी अवसंरचना पर दबाव:** झुग्गी बस्तियों का प्रसार और सार्वजनिक परिवहन की कमी तब उत्पन्न होती है जब औपचारिक आवास व्यवस्था निम्न आय वर्ग के प्रवासियों को समाहित नहीं कर पाती।
- **सामाजिक तनाव और पहचान की राजनीति:** जब स्थानीय आबादी प्रवासियों को सीमित संसाधनों और नौकरियों के लिए प्रतिस्पर्धी के रूप में देखती है, तो अक्सर "भूमिपुत्र" जैसी विचारधाराएं उभरती हैं। ऐतिहासिक रूप से महाराष्ट्र और कर्नाटक जैसे राज्यों में इसके कारण राजनीतिक घर्षण देखा गया है।
- **महिलाओं पर दोहरा बोझ:** प्रवासी महिलाएँ अस्थिर अनौपचारिक रोजगार के साथ-साथ सामाजिक सुरक्षा के अभाव, जैसे सस्ती बाल देखभाल या सुरक्षित सार्वजनिक परिवहन की कमी, का सामना करती हैं।
- **पर्यावरणीय दबाव:** दिल्ली जैसे शहरों में वायु प्रदूषण की समस्या अनियोजित शहरी विस्तार और बढ़ती जनसंख्या से जुड़े वाहनों की संख्या में वृद्धि से और गंभीर हो जाती है।

खाद्य सुरक्षा की पोर्टेबिलिटी सुनिश्चित करने के लिए वन नेशन वन राशन कार्ड जैसी योजनाएँ और प्रवासी श्रमिकों के लिए स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार महत्वपूर्ण हैं। साथ ही, प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के अंतर्गत किफायती किराये के आवास परिसर (ARHCs) जैसी योजनाएँ सम्मानजनक आवास उपलब्ध कराने में सहायक हो सकती हैं।

Q 5. सांस्कृतिक बहुलतावाद और धर्मनिरपेक्षता के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए। ये दोनों अवधारणाएँ मिलकर भारतीय समाज की एकता और स्थिरता में किस प्रकार योगदान देती हैं?

उत्तर— भारत अत्यंत विविधतापूर्ण समाज है, जहाँ धर्म, भाषा, जातीयता और संस्कृति में व्यापक भिन्नताएँ पाई जाती हैं। इस विविधता के बीच एकता बनाए रखने में दो प्रमुख सिद्धांत सांस्कृतिक बहुलतावाद और धर्मनिरपेक्षता महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सांस्कृतिक बहुलतावाद विविधता को स्वीकार करता है, जबकि धर्मनिरपेक्षता उसके शासन के लिए निष्पक्ष विधिक ढाँचा प्रदान करती है।

सांस्कृतिक बहुलतावाद और धर्मनिरपेक्षता के बीच अंतर

आधार	सांस्कृतिक बहुलतावाद	धर्मनिरपेक्षता
प्रकृति	सामाजिक सिद्धांत	राजनीतिक–संवैधानिक सिद्धांत
केंद्रबिंदु	विविधता की मान्यता	धर्म के प्रति राज्य की तटस्थता
उद्देश्य	सांस्कृतिक पहचानों का संरक्षण	धार्मिक समानता सुनिश्चित करना
क्षेत्र	समाज और सामुदायिक जीवन	शासन और कानून

अतः, सांस्कृतिक बहुलतावाद विविधता को स्वीकार करने की अवधारणा है, जबकि धर्मनिरपेक्षता उस विविधता के न्यायपूर्ण और समान नियमन का सिद्धांत है।

एकता और स्थिरता में संयुक्त भूमिका

1. राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा: बहुलतावाद समुदायों को अपनी पहचान बनाए रखने की अनुमति देता है, जबकि धर्मनिरपेक्षता किसी एक धर्म के वर्चस्व को रोककर सभी में राज्य के प्रति विश्वास और सुरक्षा की भावना उत्पन्न करती है।
2. संघर्ष में कमी: अल्पसंख्यकों के अधिकारों के कानूनी संरक्षण से हाशिए पर जाने का डर कम होता है, जिससे सामाजिक टकरावों में कमी आती है।
3. लोकतांत्रिक सहभागिता को बढ़ावा: सभी समूहों को राजनीतिक और सामाजिक जीवन में समान अवसर और भागीदारी मिलती है।
4. सामाजिक सुधार का समर्थन: धर्मनिरपेक्ष ढाँचा बिना धार्मिक स्वतंत्रता को बाधित किए लैंगिक न्याय जैसे प्रगतिशील सुधारों को संभव बनाता है।
5. संवैधानिक नैतिकता को सुदृढ़ करना: ये सिद्धांत समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के मूल्यों को सुदृढ़ करते हैं।

अंततः, सांस्कृतिक बहुलतावाद भारत की विविधता का सामाजिक आधार है और धर्मनिरपेक्षता उसका संवैधानिक ढाँचा। दोनों मिलकर ऐसा संतुलित मॉडल प्रस्तुत करते हैं जो विविधता का सम्मान करते हुए उसे समानता और न्याय के मानकों पर संचालित करता है। यही संयोजन विविधतापूर्ण भारत को एकजुट और स्थिर बनाए रखने का सर्वोत्तम मार्ग है।

Q 6. LPG सुधारों ने भारत में एक नए मध्यम वर्ग के उदय में योगदान दिया है। इसके समाज और राजनीति पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर— उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (LPG) पर आधारित सुधारों ने भारत की अर्थव्यवस्था में एक बड़े परिवर्तन की शुरुआत की, जिसके माध्यम से देश एक बंद, राज्य-प्रधान आर्थिक मॉडल से निकलकर अधिक खुली, बाज़ार-आधारित और वैश्विक रूप से जुड़ी अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर हुआ।

समाज पर प्रभाव

1. **उपभोग-आधारित अर्थव्यवस्था:** नया मध्यम वर्ग आवास, ऑटोमोबाइल, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और डिजिटल तकनीकों में बाज़ार विस्तार को गति देता है। बेंगलुरु, हैदराबाद और नोएडा जैसे शहरों में IT हब का विकास LPG के बाद के नए अवसरों का प्रतीक है। स्मार्टफोन और ई-कॉमर्स के विस्तार से नई आकांक्षाएँ परिलक्षित होती हैं।
2. **शैक्षिक और पेशागत गतिशीलता:** निजी शिक्षा, तकनीकी संस्थानों के विस्तार और IT/ITES क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर रोजगार अवसरों ने सामाजिक उन्नयन को बढ़ावा दिया। सेवा क्षेत्र का योगदान GDP में लगभग 55% तक पहुँच चुका है।
3. **बदलते सामाजिक मूल्य:** वैश्वीकरण और शहरीकरण के प्रभाव से व्यक्तिवाद, एकल परिवार प्रणाली और लैंगिक भूमिकाओं में परिवर्तन देखा गया है। सेवा क्षेत्र और स्टार्टअप में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी सामाजिक परिवर्तन को दर्शाती है।
4. **बढ़ती असमानता:** मध्यम वर्ग के विस्तार के बावजूद आय-वितरण में असमानता बढ़ी है। भारत में शीर्ष 10% आय अर्जक लगभग 58% राष्ट्रीय आय प्राप्त करते हैं, जबकि निचले 50% के हिस्से में केवल 15% आय आती है।

राजनीति पर प्रभाव

1. **मुद्दों पर आधारित मतदान:** मध्यम वर्ग के लिए शासन की गुणवत्ता, आधारभूत ढाँचा, भ्रष्टाचार-मुक्त प्रशासन और आर्थिक विकास प्रमुख मुद्दे बन गए हैं। 2011 का भ्रष्टाचार-विरोधी आंदोलन इस प्रवृत्ति को दर्शाता है।
2. **डिजिटल राजनीतिक भागीदारी:** इंटरनेट के व्यापक प्रसार ने सोशल मीडिया के माध्यम से राजनीतिक जागरूकता और जनमत निर्माण को सशक्त किया है, जिससे चुनावी विमर्श प्रभावित होता है।
3. **नीतिगत अभिमुखता:** सरकार शहरी अवसंरचना (स्मार्ट सिटी), कर सुधार (GST) और उद्यमिता (स्टार्टअप इंडिया) जैसी नीतियों पर ध्यान केंद्रित कर रही है, जो मध्यम वर्ग की आकांक्षाओं के अनुरूप हैं।

अंततः, LPG सुधारों ने भारत को एक गतिशील, वैश्विक रूप से एकीकृत अर्थव्यवस्था में परिवर्तित किया, जिससे GDP वृद्धि, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और औद्योगिक आधुनिकीकरण को बढ़ावा मिला। फिर भी, असमानता, क्षेत्रीय विषमताएँ और पर्यावरणीय चुनौतियाँ संतुलित नीतियों की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं। सुशासन और व्यापार सुगमता को सुदृढ़ करते हुए इन चुनौतियों का समाधान करने से भारत LPG सुधारों के लाभों को बनाए रखते हुए समावेशी और सतत आर्थिक विकास प्राप्त कर सकता है।

Q 7. ऐतिहासिक रूप से भारत में उद्योगों की स्थापना कच्चे माल और बाजार की निकटता द्वारा निर्धारित होती रही है। उपयुक्त उदाहरणों के साथ परीक्षण कीजिए।

उत्तर: औद्योगिक अवस्थिति का अर्थ कुछ विशेष कारकों के आधार पर उद्योगों की स्थापना के भूगोल से है। भारत में औद्योगिकीकरण का आरंभिक स्वरूप मुख्य रूप से दो महत्वपूर्ण कारकों—कच्चे माल की निकटता और बाजार की निकटता—से प्रभावित था, क्योंकि इन्हें परिवहन लागत को प्रभावित करने वाले सबसे शक्तिशाली कारक माना जाता था। हालांकि समय के साथ अन्य कारकों का महत्व बढ़ा है, लेकिन ये दोनों आज भी प्रासंगिक हैं।

1. कच्चे माल पर आधारित उद्योग

- **भारी और वजन कम करने वाले उद्योग:** भारी उद्योग और ऐसे उद्योग जिनमें उत्पादन प्रक्रिया के दौरान कच्चे माल का वजन कम हो जाता है, वे आमतौर पर कच्चे माल के स्रोतों के निकट स्थापित होना पसंद करते हैं।
- **लौह और इस्पात उद्योग:** जमशेदपुर में इस्पात संयंत्र की स्थापना

सिंहभूम के लौह अयस्क भंडारों और पूर्वी भारत के कोयला क्षेत्रों के निकट की गई है। इसी प्रकार, भिलाई इस्पात संयंत्र भी डल्ली-राजहरा के लौह अयस्क भंडारों के पास स्थित है।

- **सीमेंट उद्योग:** सीमेंट उद्योग चूना पत्थर के भंडारों वाले क्षेत्रों के पास स्थित होते हैं, क्योंकि चूना पत्थर कुल कच्चे माल का लगभग 60-65% हिस्सा होता है।
- **कृषि आधारित उद्योग:** यहाँ तक कि कृषि आधारित उद्योग भी इसी सिद्धांत का पालन करते हैं। उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र की चीनी मिलें गन्ना खेती केंद्रों के पास स्थित हैं क्योंकि गन्ना एक भारी और शीघ्र खराब होने वाली फसल है।
- **सूती वस्त्र उद्योग:** सूती वस्त्र उद्योग पारंपरिक रूप से कपास उगाने वाले केंद्रों की निकटता के कारण अहमदाबाद में फला-फूला है।

2. बाजार-उन्मुख उद्योग

- **उपभोक्ता वस्तुएँ:** जो उद्योग उपभोक्ता वस्तुओं और शीघ्र खराब होने वाले उत्पादों का निर्माण करते हैं, वे आम तौर पर बड़े बाजारों के करीब रहना पसंद करते हैं।
- **ऑटोमोबाइल और परिधान:** चेन्नई में ऑटोमोबाइल उद्योग का विकास घरेलू बाजारों तक पहुँच और निर्यात के लिए उपलब्ध बंदरगाह सुविधाओं के कारण हुआ। इसी तरह, तिरुपुर का निटवेयर क्लस्टर निर्यात बाजार संपर्कों और अवसंरचना संपर्क के कारण समृद्ध हुआ है।
- **आधुनिक कारक:** हाल के दशकों में बुनियादी ढाँचे, बंदरगाहों, कुशल श्रम और सरकारी नीतियों जैसे विभिन्न कारकों ने इन पारंपरिक कारकों को और मजबूती प्रदान की है।

अतः, कच्चे माल की आपूर्ति और बाजार की निकटता ने अनिवार्य रूप से अतीत में भारत की औद्योगिक अवस्थिति को विशेष रूप से भारी और कृषि आधारित उद्योगों को परिभाषित किया। हालांकि, उदारीकरण और वैश्वीकरण के दौर के बाद औद्योगिक अवस्थिति के परिदृश्य में व्यापक बदलाव आया है।

Q 8. विश्व के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उच्च जैव विविधता के लिए उत्तरदायी जलवायु और पारिस्थितिक कारकों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर— पृथ्वी का उष्णकटिबंधीय क्षेत्र, जो लगभग 23½° उत्तरी अक्षांश से 23½° दक्षिणी अक्षांश के बीच स्थित है, विश्व की कुल स्थलीय सतह के आधे से भी कम भाग में विस्तृत है, फिर भी यहाँ प्रजातियों की अत्यधिक विविधता पाई जाती है। उष्णकटिबंधीय वर्षावनों में पृथ्वी की कुल जैव-विविधता का लगभग 50% से अधिक भाग पाया जाता है।

1. जलवायवीय कारक

(क) उच्च सौर ऊर्जा और तापमान: उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वर्ष भर अधिकतम सौर विकिरण प्राप्त होता है। यहाँ औसत तापमान अधिक और मौसमी उतार-चढ़ाव न्यूनतम होता है, जिससे प्रकाश-संश्लेषण और जैव-चयापचय की क्रियाएँ तीव्र होती हैं। उदाहरण के लिए, अमेज़न वर्षावन में शुद्ध प्राथमिक उत्पादकता (NPP) $2000 g/m^2$/वर्ष से अधिक दर्ज की गई है, जो विश्व में सर्वाधिक में से एक है।

(ख) अधिक वर्षा: भूमध्यरेखीय क्षेत्रों में 2000 मिमी से अधिक वार्षिक वर्षा सघन वनस्पति के लिए सहायक है। कांगो बेसिन में निरंतर वर्षा के कारण विशाल वन पारिस्थितिक तंत्र विकसित हुए हैं।

(ग) जलवायु स्थिरता: समशीतोष्ण क्षेत्रों की तुलना में, जो हिमयुगों से प्रभावित रहे, उष्णकटिबंधीय जलवायु भूवैज्ञानिक समय में अपेक्षाकृत स्थिर रही है। इससे प्रजातियों के विकास के लिए निरंतर अवसर मिले और विलुप्ति दर कम रही।

2. पारिस्थितिक और विकासात्मक कारक

(क) उच्च प्राथमिक उत्पादकता: अधिक ऊर्जा उपलब्धता जटिल खाद्य-श्रृंखलाओं और अनेक पोषण स्तरों का समर्थन करती है।

(ख) निच (Niche) विशेषीकरण: आर्द्र वनों में ऊर्ध्वाधर स्तर उद्गामी परत, छत्र, अधस्तलीय परत और वन-भूमि विकसित होते हैं। ये विभिन्न स्तर अनेक सूक्ष्म आवास प्रदान करते हैं। एक हेक्टेयर क्षेत्र में 200 से अधिक वृक्ष प्रजातियाँ पाई जा सकती हैं।

(ग) तीव्र जैविक अंतःक्रियाएँ और सह-विकास: परागण और बीज-वितरण में विशेषीकरण भी जैव-विविधता को बढ़ावा देता है।

(घ) विशाल आवास क्षेत्र: प्रजाति-क्षेत्र संबंध के सिद्धांत के अनुसार, बड़े और सतत उष्णकटिबंधीय वन अधिक प्रजातियों को आश्रय दे सकते हैं।

अतः उच्च ऊर्जा प्रवाह, पर्याप्त आर्द्रता, जलवायु की स्थिरता, पारिस्थितिक जटिलता और दीर्घकालिक विकासवादी इतिहास इन सभी कारकों के संयुक्त प्रभाव से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में असाधारण जैव-विविधता विकसित हुई है, जो पृथ्वी पर जीवन की “पालना” के रूप में जानी जाती है।

Q 9. भारत में शरणार्थी बस्तियों का मेजबान समुदायों पर पड़ने वाले सामाजिक-आर्थिक प्रभावों की चर्चा कीजिए।

उत्तर: भारत ने 1947 ई. के विभाजन से लेकर, 1959 ई. में तिब्बतियों के आगमन, 1960 के दशक में चकमा शरणार्थियों और 1971 ई. में बांग्लादेशियों के आगमन तक लाखों शरणार्थियों को शरण दी है। यद्यपि भारत 1951 ई. के 'UN शरणार्थी सम्मेलन' का हस्ताक्षरकर्ता नहीं है, फिर भी इसकी खुले द्वार की नीति ने मेजबान क्षेत्रों में जटिल सामाजिक-आर्थिक स्थितियाँ उत्पन्न की हैं।

मेजबान समुदायों पर आर्थिक प्रभाव

- **श्रम बाजार पर प्रभाव:** शरणार्थी अक्सर अनौपचारिक क्षेत्रों में प्रवेश करते हैं, जिससे स्थानीय श्रम गतिशीलता प्रभावित होती है। उदाहरण के लिए, दिल्ली में विभाजन के बाद आए शरणार्थियों ने लघु उद्योगों और व्यापार के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने लाजपत नगर और राजेंद्र नगर जैसे कई प्रमुख बाजारों को स्थापित किया।
- **बुनियादी ढांचा और संसाधन आवंटन:** शरणार्थियों की भारी आमद सार्वजनिक बुनियादी ढांचे पर दबाव डालती है। 1971 में पूर्वी पाकिस्तान से आए लोगों के बड़े प्रवाह ने पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा और असम के संसाधनों पर अत्यधिक बोझ डाल दिया था।
- **शहरी अनौपचारिकता और आवास का तनाव:** दिल्ली और जम्मू में रहने वाले रोहिंग्या शरणार्थी अक्सर अनौपचारिक बस्तियों में रहते हैं जहाँ स्वच्छता और सार्वजनिक सेवाओं की कमी होती है, जिससे पहले से ही भीड़भाड़ वाले शहरी ढांचे पर दबाव बढ़ जाता है।

मेजबान समुदायों पर सामाजिक प्रभाव

- सामाजिक एकजुटता और पहचान की राजनीति: शरणार्थियों का आगमन जनसांख्यिकीय संतुलन को बदल सकता है। असम में, पूर्वी पाकिस्तान/बांग्लादेश से हुए प्रवास ने 'असम आंदोलन' (1979-85) जैसी पहचान-आधारित हलचलों को जन्म दिया।

- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान और समृद्धि:** शरणार्थियों ने मेजबान समाजों को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध भी किया है। तिब्बती बस्तियों ने बौद्ध संस्कृति, उनके खान-पान और हस्तशिल्प को भारत में लोकप्रिय बनाया है।
- **राजनीतिक और सुरक्षा आयाम:** सीमावर्ती क्षेत्रों में शरणार्थी बस्तियाँ सुरक्षा संबंधी चिंताएँ उत्पन्न कर सकती हैं। 1985 का 'असम समझौता' उन सामाजिक तनावों का सीधा राजनीतिक परिणाम था, जो प्रवास के कारण राज्य के भाषाई और धार्मिक स्वरूप में आए बदलाव की वजह से उत्पन्न हुए थे।

परोपकार-आधारित मॉडल से विकास-आधारित एकीकरण की ओर बढ़ना एक संतुलित दृष्टिकोण के लिए आवश्यक है। एक **राष्ट्रीय शरणार्थी कानून** बनाने से एक संरचित ढांचा मिल सकता है, जिससे मेजबान समुदायों के हितों और पहचान की रक्षा करते हुए शरणार्थियों की आर्थिक क्षमता का लाभ उठाया जा सके।

Q 10. भारत में प्रवाल भित्तियों के वितरण की व्याख्या कीजिए और उनके आर्थिक एवं पारिस्थितिक महत्व का आकलन कीजिए।

उत्तर: प्रवाल भित्तियाँ उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के गर्म और उथले जल (20-30°C) में कोरल पॉलिप्स के समूहों द्वारा निर्मित कैल्शियमयुक्त समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र हैं। भारत में, प्रवाल भित्तियाँ कुछ विशिष्ट तटीय और द्वीपीय क्षेत्रों तक ही सीमित हैं, क्योंकि इनके विकास के लिए स्वच्छ जल, सूर्य के प्रकाश की पहुँच और 27-35 ppt के बीच लवणता की आवश्यकता होती है।

भारत में प्रवाल भित्तियों का वितरण

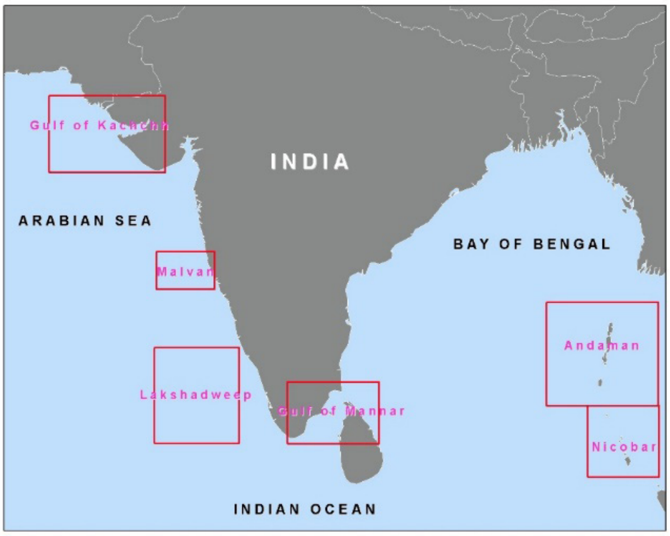

- अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
  - ✓ यह भारत की सबसे बड़ी और सबसे विविध प्रवाल प्रणाली है।
  - ✓ यह बंगाल की खाड़ी में स्थित है।
  - ✓ यहाँ मुख्य रूप से 'तटीय' (फ्रिंजिंग) प्रवाल भित्तियाँ और कुछ 'अवरोधक' (बैरियर) प्रकार की संरचनाएँ पाई जाती हैं।
  - ✓ स्वच्छ जल और तलछट की कमी के कारण यहाँ प्रजातियों की उच्च विविधता मौजूद है।
- लक्षद्वीप द्वीप समूह
  - ✓ यह भारत में एकमात्र 'वलयाकार' (एटोल) प्रकार की प्रवाल भित्तियाँ हैं।
  - ✓ यह अरब सागर में स्थित है।
  - ✓ यहाँ प्रवाल संरचनाएँ लैगून को घेरे रहती हैं।
  - ✓ यह क्षेत्र प्रवाल विरंजन और समुद्र के स्तर में वृद्धि के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है।
- मन्नार की खाड़ी
  - ✓ तमिलनाडु तट के साथ स्थित ये तटीय भित्तियाँ हैं।
  - ✓ यह 'मन्नार की खाड़ी समुद्री बायोस्फीयर रिजर्व' का हिस्सा है।
  - ✓ यह समुद्री जैव विविधता के मामले में एक समृद्ध क्षेत्र है, जिसमें समुद्री घास और मैंग्रोव भी शामिल हैं।
- कच्छ की खाड़ी
  - ✓ गुजरात में स्थित फ्रिंजिंग भित्तियाँ।
  - ✓ ये उथले और मटमैले जल में स्थित हैं।
  - ✓ ये गुजरात के समुद्री राष्ट्रीय उद्यान के तहत संरक्षित हैं।
- पारिस्थितिक महत्व
  - ✓ **जैव विविधता का केंद्र:** ये मछलियों, मोलस्क, क्रस्टेशियंस और समुद्री स्तनधारियों के लिए आवास प्रदान करते हैं।
  - ✓ **तटीय सुरक्षा:** ये चक्रवात और समुद्री तूफानों के लिए प्राकृतिक बाधा के रूप में कार्य करते हैं; उदाहरण के लिए, 2004 की सुनामी के दौरान अंडमान क्षेत्र में इनकी भूमिका।
  - ✓ **नर्सरी ग्राउंड:** ये व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण मछलियों के प्रजनन और विकास के लिए आधार प्रदान करते हैं।
  - ✓ **पोषक तत्व चक्र और कार्बन भंडारण:** ये समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में मदद करते हैं।
- आर्थिक महत्व
  - ✓ **मत्स्य पालन और आजीविका:** ये लक्षद्वीप और तमिलनाडु के तटीय समुदायों की आजीविका का समर्थन करते हैं।
  - ✓ **पर्यटन:** अंडमान और लक्षद्वीप में स्कूबा डाइविंग और इको-टूरिज्म से राजस्व उत्पन्न होता है।
  - ✓ **औषधीय संसाधन:** ये बायोएक्टिव यौगिकों के स्रोत हैं, जिनका उपयोग दवाओं में होता है।
  - ✓ **तटीय बुनियादी ढांचे की सुरक्षा:** कटाव को कम कर बंदरगाहों की सुरक्षा में सहायक।

भारत की प्रवाल भित्ति प्रणाली भौगोलिक रूप से सीमित है, लेकिन आर्थिक रूप से अमूल्य और अत्यधिक संवेदनशील है। वर्तमान में, ये भित्तियाँ जलवायु परिवर्तन, महासागरों के अम्लीकरण और मानवीय गतिविधियों के कारण विलुप्त होने के खतरे का सामना कर रही हैं। संरक्षित क्षेत्रों में सुधार, मानवीय गतिविधियों का नियमन और जलवायु-संवर्धित प्रबंधन मॉडल को अपनाना प्रवाल संरक्षण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

Q 11. बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जन-आधारित विचारधाराओं का उदय उदार लोकतंत्र के संकटों की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। समाजवाद, फासीवाद और नाज़ीवाद के संदर्भ में इसका परीक्षण कीजिए।

उत्तर: बीसवीं शताब्दी का प्रारम्भ राजनीतिक और आर्थिक उथल-पुथल का दौर था, जिसने उन्नीसवीं शताब्दी के उदार लोकतंत्र की संरचनात्मक कमजोरियों को उजागर कर दिया। सीमित मताधिकार, आर्थिक असमानता, साम्राज्यवाद तथा प्रथम विश्व युद्ध की त्रासदी ने समाजवाद, फासीवाद और नाज़ीवाद जैसी जन-आधारित विचारधाराओं के उदय के लिए उपजाऊ जमीन तैयार की।

समाजवाद: पूँजीवादी असमानता की प्रतिक्रिया

- समाजवाद, जिसका वैचारिक आधार कार्ल मार्क्स के सिद्धांतों पर था, उदार लोकतंत्र की इस आलोचना पर आधारित था कि यह बुर्जुआ वर्ग के हितों की रक्षा करता है, जबकि श्रमिक वर्ग के शोषण की उपेक्षा करता है।
  संकट की पृष्ठभूमि: औद्योगिक पूँजीवाद के कारण अत्यधिक असमानता, बेरोजगारी और दयनीय कार्य परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं।
- **उदाहरण:** व्लादिमीर लेनिन के नेतृत्व में रूसी क्रांति, जिसने अस्थायी सरकार को उखाड़ फेंका, क्योंकि वह युद्ध और आर्थिक संकट का समाधान नहीं कर पाई थी।
- **आकर्षण:** वर्गहीन समाज, उत्पादन पर श्रमिकों का नियंत्रण और सामाजिक न्याय का वादा किया।

इस प्रकार समाजवाद उदार लोकतंत्र की आर्थिक समानता और सामाजिक कल्याण सुनिश्चित करने में असफलता के विरुद्ध एक व्यापक जन-आंदोलन के रूप में उभरा।

फासीवाद: राजनीतिक अस्थिरता की प्रतिक्रिया

- फासीवाद, बेनिटो मुसोलिनी के नेतृत्व में, प्रथम विश्व युद्ध के बाद इटली में उभरा।
- **संकट की पृष्ठभूमि:** आर्थिक मंदी, बेरोजगारी, समाजवादी क्रांति का भय और कमजोर गठबंधन सरकारों ने संसदीय लोकतंत्र को चुनौती दी।
- **उदाहरण:** "मार्च ऑन रोम" ने मुसोलिनी को सत्ता में आने का अवसर दिया, क्योंकि उसने स्वयं को व्यवस्था और स्थिरता लाने वाला नेता प्रस्तुत किया।
- **आकर्षण:** राष्ट्रवाद, अधिनायकवाद, राज्य की सर्वोच्चता और विरोध का दमन।

फासीवाद ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता और संसदीय विमर्श जैसे उदार मूल्यों को त्यागकर केंद्रीकृत सत्ता के माध्यम से व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास किया।

नाज़ीवाद: उग्र राष्ट्रवादी प्रतिक्रिया

- नाज़ीवाद, एडोल्फ हिटलर के नेतृत्व में, फासीवाद का अधिक उग्र और चरम रूप था।
- **संकट की पृष्ठभूमि:** वर्साय की संधि का अपमान, 1923 की महा-मुद्रास्फीति और महान मंदी ने वाइमर गणराज्य को कमजोर कर दिया।
- **आकर्षण:** आर्थिक पुनरुत्थान, राष्ट्रीय गौरव की पुनर्स्थापना और नस्लीय शुद्धता के वादे।
- **जन-संगठन:** दुष्प्रचार, युवा समूहों और 'स्टॉर्म ट्रूपर्स' ने नाजीवाद को एक व्यापक जन आंदोलन बना दिया।

नाज़ीवाद ने लोकतांत्रिक स्वतंत्रताओं का उपयोग स्वयं लोकतंत्र को नष्ट करने के लिए किया और एक सर्वसत्तावादी राज्य की स्थापना की।

समाजवाद, फासीवाद और नाज़ीवाद का उदय इस बात का परिणाम था कि उदार लोकतंत्र आर्थिक संकट, सामाजिक असमानता और राष्ट्रीय अस्थिरता से प्रभावी ढंग से निपटने में असफल रहा। जहाँ समाजवाद का लक्ष्य समानता और न्याय आधारित समाज की स्थापना था, वहीं फासीवाद और नाज़ीवाद ने लोकतांत्रिक संरचनाओं को समाप्त कर अधिनायकवादी और सर्वसत्तावादी व्यवस्थाएँ स्थापित कीं। अंतर्वर्ती काल ने यह स्पष्ट कर दिया कि यदि आर्थिक और राजनीतिक संकटों का समाधान न किया जाए, तो समाज उग्र जन-आधारित विचारधाराओं की ओर मुड़ सकता है, जो इतिहास की दिशा बदल देती हैं।

Q 12. भारत में क्षेत्रवाद आर्थिक असमानताओं के साथ-साथ सांस्कृतिक पहचान में भी निहित है। सामाजिक सशक्तिकरण पर इसके प्रभावों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर— भारत में क्षेत्रवाद की जड़ें भाषाओं, संस्कृतियों, जातीय समूहों, समुदायों और धर्मों जैसी विविधताओं में निहित हैं। इन पहचान-चिह्नों का क्षेत्रीय संकेंद्रण और क्षेत्रीय उपेक्षा की भावना इसे और प्रबल बनाती है।

क्षेत्रवाद के कारण

1. आर्थिक विकास में असमानताएँ

- भारत का विकास असमान रहा है। महाराष्ट्र, तमिलनाडु और गुजरात जैसे राज्य राष्ट्रीय आय में अत्यधिक योगदान देते हैं, जबकि BIMARU राज्य प्रति व्यक्ति आय और आधारभूत संरचना के मामले में पीछे हैं।
- वर्ष 2014 में तेलंगाना का गठन, अविभाजित आंध्र प्रदेश में सिंचाई, रोजगार और व्यय में उपेक्षा के कारण हुआ।
- झारखंड और छत्तीसगढ़ जैसे राज्य खनिज संपदा से समृद्ध होने के बावजूद आर्थिक रूप से विशेषकर जनजातीय क्षेत्रों में पिछड़े रहे हैं।

2. सांस्कृतिक पहचान

- भारत की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता ने क्षेत्रीय आकांक्षाओं को बल दिया है। राज्य पुनर्गठन अधिनियम के माध्यम से भाषाई संघवाद स्थापित हुआ।
- तमिलनाडु में द्रविड़ आंदोलन जैसे क्षेत्रीय आंदोलनों ने सांस्कृतिक समरूपीकरण के विरुद्ध क्षेत्रीय भाषाओं और परंपराओं के संरक्षण पर जोर दिया।

भारत में क्षेत्रवाद का प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव

- विद्वानों का मत है कि यदि क्षेत्रीय मांगों को राजनीतिक व्यवस्था में समाहित किया जाए, तो क्षेत्रवाद राष्ट्र-निर्माण में सहायक हो सकता है।
- राज्यत्व या स्वायत्तता के माध्यम से क्षेत्रीय पहचान को मान्यता मिलने से लोगों में आत्मनिर्णय की भावना और सशक्तिकरण बढ़ता है।
- भारत में क्षेत्रीय पहचानें हमेशा राष्ट्रीय पहचान के विरोध में नहीं रहीं; बल्कि इस प्रक्रिया ने लोकतांत्रिक भागीदारी को बढ़ाया है।
- प्रतिनिधिक लोकतंत्र लोगों के अधिक निकट आया है, जिससे नागरिकों की भागीदारी और संलग्नता बढ़ी है।

नकारात्मक प्रभाव

- क्षेत्रवाद को अक्सर राष्ट्र की एकता, विकास और प्रगति के लिए चुनौती माना जाता है। यह आंतरिक सुरक्षा संबंधी समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है, जहाँ कुछ उग्रवादी समूह क्षेत्रीय भावनाओं को बढ़ावा देते हैं।
- क्षेत्रवाद ने गठबंधन राजनीति और क्षेत्रीय दलों के प्रभाव को बढ़ाया है।
- कुछ क्षेत्रीय नेता भाषा और संस्कृति के आधार पर वोट-बैंक की राजनीति करते हैं, जो स्वस्थ लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के विरुद्ध है।

वर्तमान समय की आवश्यकता संतुलित क्षेत्रीय विकास, संवैधानिक अधिकारों की रक्षा और सत्ता का विकेंद्रीकरण है। स्थानीय निकायों का सशक्तिकरण, क्षेत्रीय स्तर पर रोजगार सृजन और समावेशी विकास के माध्यम से क्षेत्रीय असमानताओं को कम किया जा सकता है। इससे भारत के विभिन्न क्षेत्रों के बीच एकता, सामंजस्य और सामाजिक सशक्तिकरण को मजबूती मिलेगी।

Q 13. "बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय केवल एक साहित्यकार नहीं थे, बल्कि भारतीय राष्ट्रवाद के बौद्धिक जनक थे।" इस कथन के आलोक में, 19वीं सदी के भारतीय पुनर्जागरण और स्वतंत्रता आंदोलन में उनके योगदान का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर: बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय (1838-1894 ई.) का आविर्भाव 19वीं सदी के भारतीय पुनर्जागरण के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर हुआ। उन्होंने भारतीय दृष्टि को अंतर्मुखी किया और स्वदेशी परंपराओं में शक्ति की खोज की। वे केवल एक उपन्यासकार नहीं थे; वे एक राजनीतिक दार्शनिक थे जिन्होंने "सांस्कृतिक" चेतना को "राजनीतिक" शक्ति में बदल दिया।

19वीं सदी के भारतीय पुनर्जागरण और स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान

- साहित्यिक योगदान और राष्ट्रीय चेतना:
    - ✓ **आनंदमठ (1882):** यह उनकी सबसे प्रभावशाली कृति है। संन्यासी विद्रोह की पृष्ठभूमि पर आधारित इस उपन्यास ने "वंदे मातरम" की अवधारणा को जन्म दिया। यह गीत आगे चलकर 1905 के स्वदेशी आंदोलन के दौरान एक ओजस्वी नारा बना और 1950 ई. में इसे भारत के 'राष्ट्रीय गीत' के रूप में अपनाया गया।
    - ✓ **दुर्गेशनंदिनी और कपालकुंडला:** इन कृतियों ने ऐतिहासिक गौरव और एक विशिष्ट बंगाली (और विस्तार रूप में भारतीय) पहचान स्थापित करने में मदद की, जिससे भारतीयों के "पिछड़ेपन" के औपनिवेशिक विमर्श को चुनौती मिली।
- **हिंदू राष्ट्रवाद का पुनरुत्थान:** उन्होंने पराधीन जनता के बीच "क्षत्रिय" (योद्धा) मूल्यों को प्रेरित करने के लिए हिंदू प्रतीकों की पुनर्व्याख्या की। 'कृष्ण चरित्र' में उन्होंने कृष्ण को एक चंचल देवता के रूप में नहीं, बल्कि एक चतुर, आदर्श राजनेता और योद्धा के रूप में चित्रित किया जो स्वतंत्रता की राह खोज रहे राष्ट्र के लिए एक आदर्श नायक थे।
- **"मातृभूमि" के बौद्धिक जनक:** बंकिम का सबसे बड़ा योगदान राजनीति का पवित्रीकरण था। उनसे पहले, राष्ट्रवाद केवल याचिकाओं और संवैधानिक बहसों का विषय था।
    - ✓ अपनी कृति 'धर्मतत्व' में उन्होंने तर्क दिया कि धर्म का सर्वोच्च रूप 'मातृभूमि की सेवा' है। इसने राजनीतिक सक्रियता को एक नैतिक और धार्मिक आधार प्रदान किया।

सीमाएँ (आलोचनात्मक पक्ष)

- **बहिष्करण के स्वर:** हिंदू प्रतीकों पर उनकी निर्भरता और ऐतिहासिक संघर्षों को धार्मिक चश्मे से देखने के कारण एक ऐसा विमर्श तैयार हुआ, जिसे एक धर्मनिरपेक्ष और बहु-धार्मिक मोर्चे में एकीकृत करना कठिन था।
- **औपनिवेशिक सेवा:** विरोधाभासी रूप से, बंकिम ने जीवन भर ब्रिटिश क्राउन के तहत डिप्टी कलेक्टर के रूप में कार्य किया, जो 19वीं सदी के भारतीय बुद्धिजीवियों के जटिल "दोहरे जीवन" को दर्शाता है।

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय भारत के "भावनात्मक एकीकरण" के शिल्पकार थे। उन्होंने भक्ति (आध्यात्मिक समर्पण) और देशप्रेम (राष्ट्रभक्ति) को मिलाकर एक सशक्त, स्वदेशी राजनीतिक विचारधारा का निर्माण किया, जिसने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक और भावनात्मक आधार प्रदान किया।

Q 14. भारत में गरीबी उन्मूलन के लिए आर्थिक सुधारों और सामाजिक न्याय के बीच संतुलन की आवश्यकता है। आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

उत्तर: भारत में गरीबी उन्मूलन की प्रक्रिया 1950-1980 के दशक के राज्य-नियंत्रित पुनर्वितरण मॉडल से विकसित होकर 1991 ई. के बाद बाजार-आधारित विकास रणनीति तक पहुँची है। यद्यपि आर्थिक सुधारों ने विकास को गति दी और गरीबी अनुपात में कमी लाई, फिर भी संरचनात्मक असमानताएँ बनी हुई हैं।

गरीबी घटाने में आर्थिक सुधारों की भूमिका

- **विकास एक प्रमुख कारक के रूप में:** 1991 ई. के बाद उच्च GDP वृद्धि ने प्रति व्यक्ति आय में उल्लेखनीय वृद्धि की। विश्व बैंक (2025) के अनुसार, भारत में अत्यधिक गरीबी (प्रति दिन $2.15 से कम आय) 2011-12 के 16.2% से घटकर 2022-23 में 2.3% रह गई।
- **राजकोषीय लाभ:** तीव्र आर्थिक वृद्धि से कर-राजस्व बढ़ता है, जिसे सरकार सामाजिक सुरक्षा योजनाओं में निवेश करती है। 1991 ई. के सुधारों के बिना मनरेगा जैसी योजनाओं के लिए आवश्यक विशाल संसाधन जुटाना कठिन होता।
- **संरचनात्मक परिवर्तन:** कम उत्पादक कृषि से सेवा और विनिर्माण क्षेत्रों की ओर स्थानांतरण ने लाखों लोगों को बेहतर आय के अवसर प्रदान किए।

सामाजिक न्याय: समान वितरण सुनिश्चित करना

- **अधिकार-आधारित कल्याण दृष्टिकोण:** राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA) और मनरेगा जैसी योजनाएँ कल्याण को अधिकार के रूप में स्थापित करती हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (PMGKAY) ने करोड़ों लोगों को पुनः गरीबी में गिरने से बचाया।
- **सकारात्मक भेदभाव और समावेशन:** आरक्षण नीतियाँ और SC/ST उप-योजनाएँ ऐतिहासिक अन्यायों को सुधारने का प्रयास करती हैं। स्वच्छ भारत, उज्ज्वला योजना और प्रधानमंत्री आवास योजना जैसी योजनाएँ कमजोर वर्गों के जीवन स्तर को सुधारती हैं।
- **बहुआयामी दृष्टिकोण:** नीति आयोग के राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक (2024) के अनुसार, पिछले 9 वर्षों में 24.8 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी से बाहर निकले।

आवश्यक संतुलन

- **सुधारों का जाल (असमानता):** आर्थिक सुधार कभी-कभी "K-आकार की वृद्धि" को जन्म देते हैं, जहाँ पूंजी-प्रधान क्षेत्र तेजी से बढ़ते हैं, जबकि अनौपचारिक क्षेत्र (जो लगभग 90% श्रमबल को समाहित करता है) पीछे रह जाता है।
- **लोकलुभावनवाद का जाल (राजकोषीय दबाव):** अत्यधिक मुफ्त योजनाएँ (रेवड़ी संस्कृति) यदि आर्थिक वृद्धि के बिना चलाई जाएँ, तो इससे राजकोषीय घाटा और महँगाई बढ़ सकती है, जिसका सबसे अधिक प्रभाव गरीबों पर पड़ता है।
- **क्षेत्रीय असमानताएँ:** केरल जैसे राज्य अत्यधिक गरीबी के लगभग शून्य स्तर के करीब पहुँच रहे हैं, (2025 के अंत तक ऐसा करने वाला पहला राज्य), वहीं बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे राज्य अभी भी गहरी अभावग्रस्तता का सामना कर रहे हैं।

आगे की राह

- श्रम-प्रधान विनिर्माण को बढ़ावा देकर रोजगार सृजन।
- स्वास्थ्य, शिक्षा और स्वच्छता जैसी **सार्वभौमिक मूलभूत सेवाओं** का विस्तार।
- शहरी गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों को सुदृढ़ करना।
- प्रगतिशील कराधान के माध्यम से राजकोषीय क्षमता बढ़ाना।
- युवाओं के कौशल विकास द्वारा शिक्षित बेरोजगारी को रोकना।

भारत में गरीबी उन्मूलन को बाजार और राज्य के बीच चयन के रूप में नहीं देखा जा सकता। आर्थिक सुधार कार्रवाई की क्षमता प्रदान करते हैं, जबकि सामाजिक न्याय शासन को वैधता देता है। वर्ष 2047 तक "विकसित भारत" के लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए, ध्यान "गरीबी हटाने" से आगे बढ़कर "समृद्धि सृजन" पर केंद्रित होना चाहिए।

Q 15. संतुलित क्षेत्रीय विकास प्राप्त करने के लिए स्मार्ट गाँव अत्यंत आवश्यक हैं। ग्रामीण अवसंरचना और आजीविका के संदर्भ में चर्चा कीजिए।

उत्तर— स्मार्ट गाँव ऐसे गाँव हैं जो आधुनिक अवसंरचना, डिजिटल कनेक्टिविटी, सतत प्रथाओं और विविधीकृत आजीविकाओं से सुसज्जित होते हैं। भारत की लगभग 68.8% जनसंख्या अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, इसलिए इन क्षेत्रों का रूपांतरण संतुलित क्षेत्रीय विकास के लिए अनिवार्य है।

ग्रामीण अवसंरचना में स्मार्ट गाँवों का महत्व:

- **भौतिक अवसंरचना**: बेहतर अवसंरचना स्थानिक असमानताओं और लेन-देन लागत को कम करती है। सड़क संपर्क से खेत से बाजार तक पहुँच सुदृढ़ होती है; विद्युतीकरण से कृषि-आधारित प्रसंस्करण संभव होता है; जल सुरक्षा से स्वास्थ्य परिणाम बेहतर होते हैं।
- **डिजिटल अवसंरचना**: भारतनेट जैसी पहल (जो 2.5 लाख ग्राम पंचायतों को उच्च गति फाइबर से जोड़ती है) इसकी रीढ़ है, जो जलवायु जोखिमों को कम करने हेतु रीयल-टाइम डेटा उपलब्ध कराती है—यह "स्मार्ट" सामाजिक अवसंरचना का उत्कृष्ट उदाहरण है।
- **सामाजिक अवसंरचना**: टेलीमेडिसिन और डिजिटल कक्षाएँ (जैसे e-Sanjeevani और DIKSHA प्लेटफॉर्म) यह सुनिश्चित करती हैं कि दूरस्थ जिले का एक ग्रामीण भी विशेषज्ञ चिकित्सक या गुणवत्तापूर्ण शिक्षक तक वैसी ही पहुँच रखे जैसा एक शहरी निवासी—इससे पलायन के "आकर्षण कारक" कम होते हैं।

स्मार्ट गाँव और ग्रामीण आजीविकाएँ

- **कृषि से परे विविधीकरण**: स्मार्ट गाँव ग्रामीण MSMEs को बढ़ावा देते हैं। 2024–25 में ऑर्गेनिक प्रोसेसिंग इकाइयों और ग्रामीण पर्यटन (एग्रो-टूरिज्म) की मांग बढ़ी है, जिससे ग्रामीण युवाओं के लिए विविध आय स्रोत बन रहे हैं।
- **कौशल विकास और उद्यमिता**: ग्रामीण BPOs और कॉमन सर्विस सेंटर (CSCs) गैर-कृषि रोजगार उत्पन्न करते हैं। डिजिटल साक्षरता और कौशल प्रशिक्षण संकटजन्य पलायन को कम करते हैं।
  - ✓ **परिशुद्ध कृषि:** AI आधारित मृदा विश्लेषण और IoT सेंसर के उपयोग से किसान जल और उर्वरक का अनुकूलन कर सकते हैं। 2025 तक, ग्रामीण समूहों में 'ड्रोन-एज-ए-सर्विस' (DaaS) मॉडल ने कीटनाशक छिड़काव और फसल निगरानी में क्रांति ला दी है, जिससे लागत में काफी कमी आई है।

ग्रामीण परिवर्तन के अग्रदूत

गाँव/ क्लस्टर	राज्य	प्रमुख विशेषताएँ
पुंसारी	गुजरात	24/7 वाई-फाई, सौर स्ट्रीट लाइट और मिनरल वाटर प्लांट; शैक्षिक बुनियादी ढाँचे पर विशेष ध्यान।
धनोरा	राजस्थान	भारत के पहले 'सेल्फ-प्लान्ड' (स्व-नियोजित) स्मार्ट विलेज के रूप में प्रसिद्ध; स्वच्छता और सामुदायिक जुड़ाव के माध्यम से 0% अपराध दर पर ध्यान।
आइबॉक क्लस्टर	मिजोरम	'रुर्बन मिशन' के तहत विकसित; पलायन रोकने के लिए पैदल पथ, कृषि-लिंक सड़कों और खेल बुनियादी ढाँचे का एकीकरण।

नीति आयोग के अनुसार "विकसित भारत @ 2047" का लक्ष्य हमारे 6.4 लाख गाँवों के रूपांतरण के बिना संभव नहीं है। स्मार्ट गाँव "ग्रामीणों के लिए विकास" से आगे बढ़कर "ग्रामीणों द्वारा विकास" की नई परिकल्पना प्रस्तुत करते हैं, जो संतुलित और समावेशी क्षेत्रीय विकास का आधार बनती है।

Q 16. पाल काल भारत में बौद्ध कला के विकास में एक विशिष्ट चरण का प्रतिनिधित्व करता है। इसकी मुख्य कलात्मक विशेषताओं और सांस्कृतिक महत्व का परीक्षण कीजिए।

उत्तर: पाल राजवंश (लगभग 8वीं-12वीं शताब्दी ईस्वी), जिसने मुख्य रूप से वर्तमान बिहार और बंगाल सहित पूर्वी भारत पर शासन किया, भारतीय उपमहाद्वीप में बौद्ध कला के अंतिम महान उत्कर्ष का प्रतीक है।

पाल बौद्ध कला की मुख्य कलात्मक विशेषताएँ

- **मूर्तिकला की उत्कृष्टता (पत्थर और कांस्य):** पाल काल की कांस्य मूर्तियाँ अपनी तकनीकी सूक्ष्मता के लिए प्रसिद्ध हैं, जिन्हें 'सीयर पेरड्यू' (सिट्रे पेर्ड्यू - लुप्त मोम विधि) प्रक्रिया का उपयोग करके बनाया गया था। इसके प्रमुख केंद्र कुर्किहार (बिहार) और नालंदा थे।
  - ✓ **काला बेसाल्ट पत्थर:** मूर्तियों में मुख्य रूप से काले बेसाल्ट (क्लोराइट पत्थर) का उपयोग किया गया है, जिसे धातु जैसी चमक देने के लिए अत्यधिक पॉलिश किया जाता था। यहाँ ऐतिहासिक बुद्ध से 'ध्यानी बुद्ध' की ओर संक्रमण दिखाई देता है। साथ ही, देवी तारा, प्रज्ञापारमिता और मारीचि जैसी देवियों के विशाल समूह का चित्रण मिलता है।
- **पांडुलिपि चित्रकला और अलंकरण:** ताड़ के पत्तों की पांडुलिपियों पर लघु चित्रकला का विकास हुआ। इसके विषय 'प्रज्ञापारमिता' जैसे बौद्ध ग्रंथों से लिए गए थे।
- **वास्तुकला में योगदान:** यद्यपि संरचनात्मक अवशेष कम ही बचे हैं, लेकिन इस काल में प्रमुख महान महाविहार (विश्वविद्यालय) फले-फूले, जैसे विक्रमशिला विश्वविद्यालय और सोमपुर महाविहार।

पाल बौद्ध कला का सांस्कृतिक महत्व

- **तांत्रिक (वज्रयान) बौद्ध धर्म का चरमोत्कर्ष:** पाल काल महायान से वज्रयान (तांत्रिक) बौद्ध धर्म की ओर परिवर्तन का प्रतीक है। कला में इसे बहु-मुखी और बहु-भुजाओं वाले देवताओं के चित्रण के माध्यम से दर्शाया गया है।
- **अंतर-क्षेत्रीय प्रभाव:** पाल कला हिमालयी क्षेत्रों (तिब्बत और

नेपाल) तथा दक्षिण-पूर्व एशिया (जावा और बर्मा) की कला के लिए प्रमुख प्रेरणा स्रोत बनी।

- ✓ **संस्थागत संरक्षण:** पूर्ववर्ती काल के विपरीत, जहाँ व्यापारी श्रेणियों ने कला को वित्तपोषित किया था, पाल कला काफी हद तक राज्य और नालंदा, विक्रमशिला एवं ओदंतपुरी के मठवासी अभिजात वर्ग द्वारा संचालित थी।
- ✓ पाल काल भारत में बौद्ध कला के विकास में एक विशिष्ट और परिपक्व चरण का प्रतिनिधित्व करता है। अपनी जन्मभूमि में बौद्ध धर्म के पतन के बाद भी, पाल कला परंपरा तिब्बत और नेपाल में जीवित रही, जो इसके स्थायी अंतर-क्षेत्रीय प्रभाव को रेखांकित करती है।

Q 17. महासागरीय धाराओं की उत्पत्ति और वितरण के लिए उत्तरदायी कारकों की व्याख्या कीजिए। ये धाराएँ वैश्विक महासागरीय परिसंचरण को बनाए रखने में किस प्रकार योगदान देती हैं?

उत्तर: महासागरीय धाराएँ समुद्री जल की व्यापक, सतत और दीर्घकालिक गतियाँ हैं, जो विभिन्न भौतिक बलों द्वारा संचालित होती हैं। ये "वैश्विक कन्वेयर बेल्ट" की तरह कार्य करती हैं और पृथ्वी पर ऊष्मा, पोषक तत्वों तथा लवणता का पुनर्वितरण करती हैं।

उत्पत्ति के लिए उत्तरदायी कारक

- **पवन प्रणाली (सतही धाराओं की प्रमुख प्रेरक शक्ति):** पवन सतही धाराओं का सबसे महत्वपूर्ण कारक है। जब पवन महासागर की सतह पर गति करती है, तो घर्षण के कारण वह जल को अपने साथ खींच लेती है।
  - ✓ **व्यापारिक पवनें:** विषुवतीय जल को पश्चिम की ओर ले जाती हैं (जैसे उत्तरी एवं दक्षिणी विषुवतीय धाराएँ)।
  - ✓ **पश्चिमी पवनें:** मध्य अक्षांशों में जल को पूर्व की ओर प्रवाहित करती हैं (जैसे उत्तर अटलांटिक प्रवाह)।
- **तापमान और लवणता (थर्मोहेलाइन परिसंचरण):** घनत्व में अंतर के कारण जल ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज दोनों दिशाओं में गति करता है।
- **तापमान:** ठंडा जल अधिक सघन होता है और नीचे की ओर जाता है, जबकि गर्म विषुवतीय जल हल्का होकर सतह पर रहता है।
- **लवणता:** अधिक लवणता जल की घनता बढ़ाती है। उदाहरण के लिए, भूमध्य सागर में अधिक वाष्पीकरण के कारण जल अधिक खारा और सघन हो जाता है, जिससे वह नीचे बैठकर अटलांटिक महासागर में गहरी धारा के रूप में प्रवाहित होता है।
- **कोरिओलिस प्रभाव:** पृथ्वी के घूर्णन के कारण धाराएँ सीधी रेखा में नहीं चलतीं। उत्तरी गोलार्ध में धाराएँ दाईं ओर तथा दक्षिणी गोलार्ध में बाईं ओर मुड़ जाती हैं।
- **महाद्वीपों और महासागरीय बेसिनों की संरचना:** स्थलखंड धाराओं को रोकते और उनकी दिशा बदलते हैं, जिससे पश्चिमी सीमांत धाराओं का सशक्तीकरण होता है।
- **सूर्य और चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण बल:** ज्वार-भाटा उत्पन्न करता है, जो स्थानीय स्तर पर धाराओं के निर्माण में सहायक होता है।

महासागरीय धाराओं का वितरण

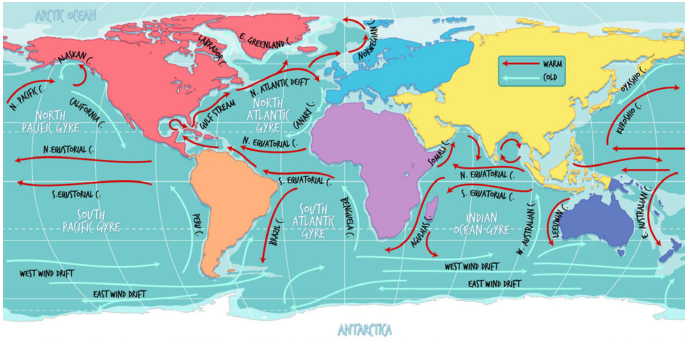

- **महासागरीय धाराएँ मुख्यतः** तीन महासागरों-अटलांटिक, प्रशांत और हिंद महासागर में पवन प्रणालियों, महाद्वीपीय अवरोधों और ताप-लवणता के अंतर के अनुसार व्यवस्थित होती हैं। ये धाराएँ प्रायः उत्तरी गोलार्ध में घड़ी की दिशा और दक्षिणी गोलार्ध में वामावर्त चक्रों (Gyres) का निर्माण करती हैं।

वैश्विक महासागरीय परिसंचरण में महासागरीय धाराओं का योगदान

- **ऊष्मा का पुनर्वितरण और जलवायु का नियमन:** गर्म धाराएँ तटीय क्षेत्रों का तापमान बढ़ाती हैं, जबकि ठंडी धाराएँ तापमान को कम करती हैं। उदाहरण के लिए, गल्फ स्ट्रीम पश्चिमी यूरोप को समान अक्षांशों के अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक गर्म रखती है, जबकि पेरू (हम्बोल्ट) धारा दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी तट को ठंडा बनाती है।
- **थर्मोहेलाइन परिसंचरण का संरक्षण:** उत्तरी अटलांटिक और अंटार्कटिक क्षेत्रों में गहरे जल का निर्माण वैश्विक परिसंचरण को संचालित करता है और अटलांटिक, प्रशांत तथा हिंद महासागरों को परस्पर जोड़ता है।
- **समुद्री पारितंत्रों पर प्रभाव:**
  - ✓ **पोषक तत्वों का पुनर्चक्रण:** धाराएँ यह सुनिश्चित करती हैं कि ऑक्सीजन-समृद्ध सतही जल गहराई तक पहुँचे।
  - ✓ **अपवेलिंग:** जहाँ अपतटीय पवनें सतही जल को दूर ले जाती हैं, वहाँ गहराई से ठंडा, पोषक तत्वों से भरपूर जल ऊपर उठता है (जैसे पेरू/हम्बोल्ट धारा क्षेत्र), जो विश्व के सर्वाधिक उत्पादक मत्स्य क्षेत्र बनते हैं।

जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में यदि थर्मोहेलाइन परिसंचरण कमजोर पड़ता है (जैसे उत्तरी अटलांटिक गहरे जल निर्माण में कमी), तो इसका वैश्विक जलवायु पर गहरा प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए महासागरीय धाराएँ केवल भौतिक प्रक्रियाएँ नहीं हैं, बल्कि पृथ्वी के पर्यावरणीय संतुलन की मूल नियामक हैं।

Q 18. भारत में 'वन संसाधनों' के वितरण की चर्चा कीजिए। भारत के वनावरण के लिए मुख्य खतरे क्या हैं और इसके संरक्षण के लिए कौन से उपाय किए गए हैं?

उत्तर: 'भारतीय वन स्थिति रिपोर्ट 2023' के अनुसार, भारत का कुल वन और वृक्ष आवरण देश के भौगोलिक क्षेत्र का 25.17% है, जबकि राष्ट्रीय वन नीति का लक्ष्य 33% है।

भारत में वन संसाधनों का वितरण

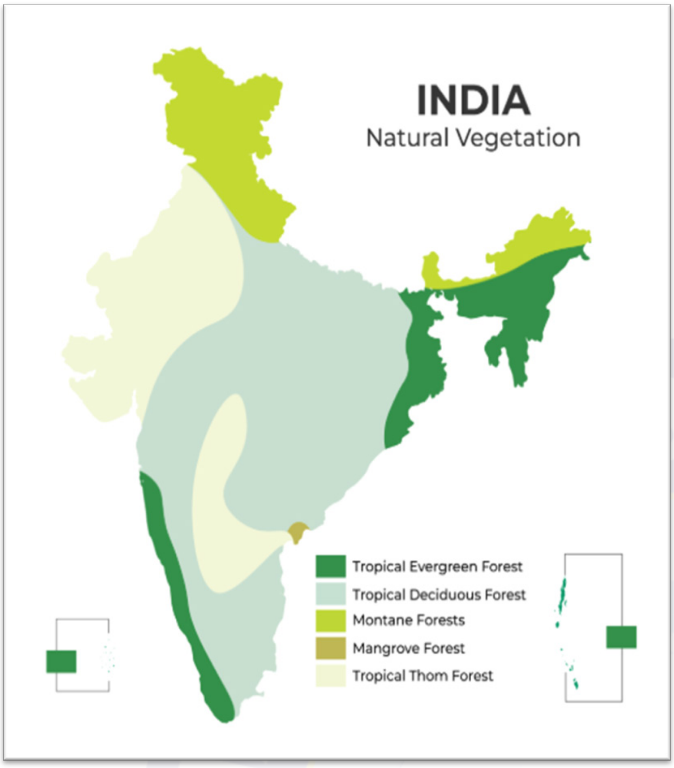

- **उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन:** मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय और नागालैंड जैसे राज्यों में 70% से अधिक वनावरण है। यहाँ घने उष्णकटिबंधीय सदाबहार और अर्ध-सदाबहार वन पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त, ये वन केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु में विस्तृत पश्चिमी घाटों में भी मिलते हैं। प्रमुख प्रजातियाँ: आबनूस (Ebony), महोगनी, रोजवुड और रबर।
- **उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन:** ये भारत के सबसे व्यापक वन प्रकार हैं, जहाँ 70-200 सेमी वर्षा होती है। यहाँ के पेड़ शुष्क मौसम में अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं। ये मुख्य रूप से मध्य भारत में पाए जाते हैं। प्रमुख प्रजातियाँ: सागौन, तेंदू, पलाश और साल।
- **पर्वतीय वन:** ये जम्मू-कश्मीर से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक हिमालयी क्षेत्र में पाए जाते हैं। प्रमुख प्रजातियाँ: ओक, देवदार, पाइन। नीलगिरी पहाड़ियों के क्षेत्र में पश्चिमी घाटों में भी समशीतोष्ण और अल्पाइन वन पाए जाते हैं जिन्हें 'शोला' (Sholas) कहा जाता है।
- **उष्णकटिबंधीय कटीले वन:** 50 सेमी से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में विरल वनस्पति और कटीली झाड़ियाँ पाई जाती हैं। ये पश्चिमी राजस्थान और गुजरात के कुछ हिस्सों में मिलते हैं। उदाहरण: अकासिया (बबूल), कैक्टस और कीकर।
- **तटीय और मैंग्रोव वन:** ये ज्वारीय क्षेत्रों और नदियों के डेल्टा में पाए जाते हैं। यहाँ की वनस्पति नमक-सहिष्णु होती है। उदाहरण: सुंदरबन (सबसे बड़ा मैंग्रोव क्षेत्र), महानदी, गोदावरी और कृष्णा के डेल्टा।

भारत के वनावरण के लिए प्रमुख खतरे

- **विकास परियोजनाओं हेतु वनों की कटाई एवं भूमि परिवर्तन:** बुनियादी ढांचे (सड़क, बांध, खनन, रेलवे) के निर्माण हेतु वन भूमि का उपयोग किया जाता है। 'लीनियर प्रोजेक्ट्स' (सड़क/रेल) आवासों को खंडित कर देते हैं। हालिया उदाहरण अरावली वन कटाई विरोध प्रदर्शन है।
- **वनाग्नि:** जलवायु परिवर्तन के कारण इनकी आवृत्ति बढ़ रही है। भारतीय वन सर्वेक्षण (FSI) के आंकड़ों के अनुसार, भारत का 36% से अधिक वनावरण बार-बार आग लगने की चपेट में है। मध्य भारत और पश्चिमी घाट विशेष रूप से संवेदनशील हैं।
- **भूमि क्षरण और मरुस्थलीकरण:** मरुस्थलीकरण भूमि क्षरण का एक विशिष्ट प्रकार है जहाँ शुष्क भूमि तेजी से बंजर हो जाती है और अपनी जैविक उत्पादकता खो देती है।
- **कृषि और झूम खेती:** पूर्वोत्तर भारत में प्रचलित इस पद्धति में 'परती चक्र' के छोटा होने से वनों का पुनरुद्धार नहीं हो पाता, जिससे मिट्टी का क्षरण होता है।

किए गए संरक्षण उपाय

- **राष्ट्रीय हरित भारत मिशन (GIM):** जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना (NAPCC) के तहत आठ मिशनों में से एक, GIM वनावरण बढ़ाने और इसकी गुणवत्ता सुधारने दोनों पर केंद्रित है।
- **प्रतिपूरक वनीकरण (CAMPA):** विकास परियोजनाओं के लिए वन भूमि लेने पर जो धनराशि जमा की जाती है, उसका उपयोग वनीकरण और पुनरुद्धार के लिए किया जाता है। इसके तहत बहाली के लिए हजारों करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं।
- **संरक्षित क्षेत्र नेटवर्क:** देश में 100 से अधिक राष्ट्रीय उद्यान और 560 से अधिक वन्यजीव अभयारण्य हैं। 'प्रोजेक्ट टाइगर' के तहत टाइगर रिजर्व और पश्चिमी घाट व पूर्वोत्तर में बायोस्फीयर रिजर्व स्थापित किए गए हैं।
- **वृक्षारोपण अभियान- 'एक पेड़ माँ के नाम':** 2024 में शुरू किया गया यह अभियान 'जन भागीदारी' पर जोर देता है।

सतत वन प्रबंधन के लिए सामुदायिक भागीदारी को मजबूत करने, वैज्ञानिक वन निगरानी और पारिस्थितिक सुरक्षा के साथ विकास का संतुलन बनाने की आवश्यकता है। 33% वनावरण के लक्ष्य को प्राप्त करना न केवल जैव विविधता संरक्षण के लिए, बल्कि पेरिस समझौते के तहत भारत की जलवायु प्रतिबद्धताओं के लिए भी अनिवार्य है।

Q 19. वैश्विक पवन प्रणालियों की उत्पत्ति और दिशा में वायुदाब पेटियों की भूमिका की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: वायुदाब पेटियाँ पृथ्वी की सतह के असमान रूप से गर्म होने और पृथ्वी के घूर्णन के कारण बनने वाले उच्च और निम्न वायुमंडलीय दबाव के अक्षांशीय क्षेत्र हैं।

वैश्विक वायुदाब पेटियाँ:

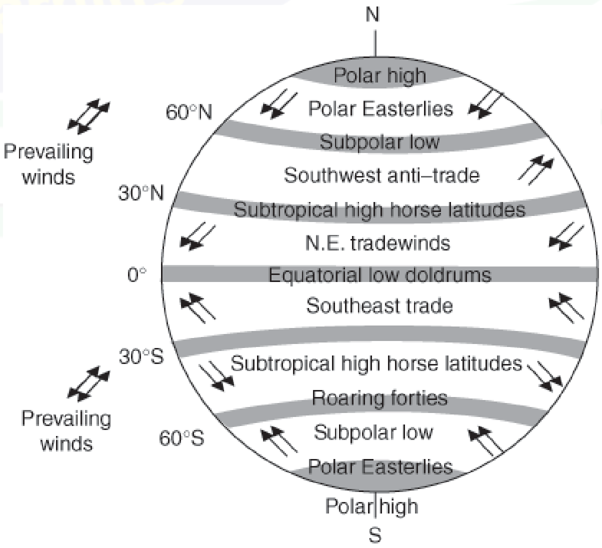

1. **भूमध्यरेखीय निम्न वायुदाब पेटी (0°):**
   - ✓ इसे डोलड्रम्स (Doldrums) भी कहा जाता है।
   - ✓ तीव्र ताप → हवा का ऊपर उठना।
   - ✓ भारी संवहनीय वर्षा।
   - ✓ यह 'अंतः-उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र' (ITCZ) से जुड़ी होती है।
2. **उप-उष्णकटिबंधीय उच्च वायुदाब पेटी (30° N & S):**
   - ✓ 'हैडली सेल' (Hadley Cell) से नीचे गिरती हवा।
   - ✓ साफ आकाश और शुष्क परिस्थितियां।
3. **उप-ध्रुवीय निम्न वायुदाब पेटी (60° N & S):**
   - ✓ गर्म पछुआ पवनों और ठंडी ध्रुवीय पवनों का अभिसरण।
   - ✓ चक्रवाती गतिविधियाँ यहाँ बार-बार होती हैं।
4. **ध्रुवीय उच्च वायुदाब पेटी (90° N & S):**
   - ✓ ठंडी और सघन हवा नीचे बैठती है।
   - ✓ सतह से बाहर की ओर हवा का प्रवाह।

पवन प्रणालियों की उत्पत्ति और दिशा में भूमिका

पवन हमेशा उच्च दाब से निम्न दाब की ओर प्रवाहित होती है। हालाँकि, इसकी दिशा कोरिओलिस प्रभाव द्वारा संशोधित होती है, जो हवाओं को उत्तरी गोलार्ध में दाईं ओर और दक्षिणी गोलार्ध में बाईं ओर विक्षेपित कर देता है।

- **व्यापारिक पवन (उष्णकटिबंधीय पूर्वी पवन):**
  - ✓ **उत्पत्ति:** ये उप-उष्णकटिबंधीय उच्च दाब से भूमध्यरेखीय निम्न दाब की ओर चलती हैं।
  - ✓ **दिशा:** उत्तरी गोलार्ध में ये उत्तर-पूर्व से और दक्षिणी गोलार्ध में दक्षिण-पूर्व से चलती हैं।
- **पछुआ पवन:**
  - ✓ **उत्पत्ति:** ये उप-उष्णकटिबंधीय उच्च दाब से उप-ध्रुवीय निम्न दाब की ओर चलती हैं।
  - ✓ **दिशा:** उत्तरी गोलार्ध में दक्षिण-पश्चिम से और दक्षिणी गोलार्ध में उत्तर-पश्चिम से चलती हैं।
- **ध्रुवीय पूर्वी पवन:**
  - ✓ **उत्पत्ति:** ये ध्रुवीय उच्च दाब से उप-ध्रुवीय निम्न दाब की ओर चलती हैं।
  - ✓ **विशेषताएँ:** ये अत्यधिक ठंडी, शुष्क और स्थिर हवाएँ हैं। जब ये गर्म पछुआ पवनों से मिलती हैं, तो 'ध्रुवीय वाताग्र' का निर्माण करती हैं।

ये वैश्विक पवन प्रणालियाँ जलवायु क्षेत्रों, वर्षा वितरण, मरुस्थलों के निर्माण, महासागरीय धाराओं तथा मानसून प्रणाली को नियंत्रित करती हैं। अतः वायुदाब पट्टियाँ केवल सैद्धांतिक अवधारणाएँ नहीं, बल्कि पृथ्वी की जलवायु एवं पर्यावरणीय प्रणाली के गतिशील नियामक हैं।

Q 20. समकालीन भारत में जाति व्यवस्था में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। इन परिवर्तनों के लिए उत्तरदायी कारकों की चर्चा कीजिए।

उत्तर: भारत में जाति व्यवस्था, जो पारंपरिक रूप से जन्म-आधारित पदानुक्रम, अंतर्विवाह, वंशानुगत व्यवसाय और सामाजिक अलगाव पर आधारित रही है, भारतीय समाज की सबसे स्थायी विशेषताओं में से एक रही है।

समकालीन समय में जाति व्यवस्था में महत्वपूर्ण बदलाव:

समाजशास्त्री जी. एस. घुर्ये ने जाति को 'खंडात्मक विभाजन' और 'पदानुक्रम' वाली प्रणाली के रूप में वर्णित किया था, जबकि एम.एन. श्रीनिवास ने जाति की गतिशीलता में 'संस्कृतिकरण' और 'पश्चिमीकरण' जैसी प्रक्रियाओं को रेखांकित किया।

पारंपरिक जाति व्यवस्था	समकालीन परिवर्तन
निश्चित व्यवसाय	व्यावसायिक गतिशीलता
कठोर पदानुक्रम	क्रमिक स्थिति गतिशीलता
सामाजिक अलगाव	बढ़ता हुआ सामाजिक मेलजोल
आधार अनुष्ठानिक पवित्रता	आधार राजनीतिक और आर्थिक शक्ति

जाति व्यवस्था में बदलाव के लिए उत्तरदायी कारक

- **समाज सुधार आंदोलन और नेता:** ज्योतिराव फुले ने ब्राह्मणवादी प्रभुत्व की आलोचना की; डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने 'जाति के विनाश' की वकालत की और संवैधानिक सुरक्षा उपायों का ढांचा तैयार किया; और पेरियार ई.वी. रामास्वामी ने तमिलनाडु में 'आत्मसम्मान आंदोलन' का नेतृत्व किया।
- **संवैधानिक और कानूनी उपाय:** संविधान ने अस्पृश्यता का उन्मूलन (अनुच्छेद 17) किया और समानता सुनिश्चित की (अनुच्छेद 14-16)। शिक्षा और सार्वजनिक रोजगार में आरक्षण लागू किया गया। इसके साथ ही, 'अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989' और मंडल आयोग (1990) के कार्यान्वयन ने OBC के लिए 27% आरक्षण सुनिश्चित किया।
- **वैश्वीकरण और बाजार अर्थव्यवस्था:** 1991 के बाद के सुधारों ने निजी क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ाए। वैश्विक बाजारों में योग्यता आधारित प्रतिस्पर्धा और समानता व मानवाधिकारों के वैश्विक मूल्यों के संपर्क ने जातिगत बंधनों को ढीला किया है।
- **लोकतांत्रीकरण और राजनीतिक लामबंदी:** सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार ने संख्यात्मक रूप से प्रभावी जातियों को सशक्त बनाया। जाति-आधारित राजनीतिक दलों (जैसे BSP, राष्ट्रीय जनता दल आदि) के उदय और राजनीतिक सौदेबाजी ने निचली जातियों के प्रतिनिधित्व को मजबूत किया है।

निरंतर चुनौतियाँ: "परंपरा की आधुनिकता"

इन बदलावों के बावजूद जाति गायब नहीं हुई है, बल्कि इसने अपना स्वरूप बदल लिया है:

- **जाति का राजनीतिकरण:** जाति का उपयोग "वोट बैंक" के रूप में किया जाता है, जिसे रजनी कोठारी ने "जाति का राजनीतिकरण" कहा है।
- **अंतर्विवाह:** विवाह अभी भी जाति की सबसे लचीली विशेषता बनी हुई है। यहाँ तक कि शहरी 'मैट्रिमोनी साइट्स' पर भी अक्सर जाति के वर्ग देखे जाते हैं।
- **उप-वर्गीकरण:** SC/ST के उप-वर्गीकरण के इर्द-गिर्द हालिया बहस दर्शाती हैं कि जाति समूहों के भीतर आंतरिक प्रतिस्पर्धा तेज हो रही है।
- **जातिगत हिंसा:** ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी जातिगत भेदभाव, सामाजिक बहिष्कार और 'ऑनर किलिंग' जैसी हिंसा की घटनाएं होती हैं।

इस प्रकार, समकालीन भारत में जाति समाप्त नहीं हो रही है, बल्कि एक कठोर सामाजिक संस्था से बदलकर एक गतिशील सामाजिक-राजनीतिक वास्तविकता के रूप में विकसित हो रही है। भविष्य की चुनौती कानूनी प्रावधानों से आगे बढ़कर वास्तविक न्याय प्राप्त करने के लिए सामाजिक समानता को और गहरा करने की है।